पाठ्यक्रम

ड्राइंग और पेंटिंग पेपर - 2

यूनिट - I

दृश्य कला के मूल तत्व (रेखा, रूप, रंग, स्वर, बनावट, स्थान, आकार, परिप्रेक्ष्य, डिजाइन आदि)। रचना के सिद्धांत - एकता, सामंजस्य, संतुलन, जोर या प्रभुत्व, लय, अनुपात, विपरीतता और छोटा करना, आदि। रचनात्मक प्रक्रिया: (अवलोकन धारणा। कल्पना, अभिव्यक्ति)। पेंटिंग के छह सिद्धांत - भारतीय और चीनी चित्रकला में।

यूनिट - II

भारतीय कला में प्रमुख रुझान- कंपनी स्कूल ऑफ पेंटिंग, राजा रवि वर्मा के साथ आधुनिकता का आगमन। बंगाल स्कूल: अबनिंद्रनाथ टैगोर और उनके शिष्य, नंदलाल बोस और उनके शिष्य। भारतीय चित्रकला में निर्णायक: अमृता शेरगिल का योगदान, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप बॉम्बे और कलकत्ता ग्रुप-कलकत्ता, शिल्पी चक्र-दिल्ली, चोल मंडल-मद्रास और बड़ौदा स्कूल-बड़ौदा। भारत के प्रसिद्ध कलाकार और मूर्तिकार- चित्रकार- अबनिंद्रनाथ टैगोर, रवीन्द्र नाथ टैगोर, नंदलाल बोस, जामिनी रॉय, ई.बी. हैवेल, असित कुमार हलदर, अमृता शेरगिल, के.के. हेब्बर, एन.एस. बेंद्रे, एम.एफ. हुसैन, एफ.एन. सुज़ा, एस.एच रज़ा, के.एच. आरा, के.जी. सुब्रमण्यम, सतीश गुजराल, जे. स्वामीनाथन, तैयब मेहता। मूर्तिकार - प्रदोष दास गुप्ता, देबी प्रसाद रॉय चौधरी, रामकिंकर बैज, धनराज भगत, शंखो चौधरी, हिम्मत शाह, नागजी पटेल, उषा रानी हूजा, अनीश कपूर।

इकाई - III

भारतीय मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला- एलोरा, एलीफेंटा, महाबलीपुरम, कोणार्क मंदिर, खजुराहो मंदिर और मीनाक्षी मंदिर। राजस्थान की मंदिर मूर्तिकला- किराडू मंदिर-बाड़मेर, हर्ष मंदिर-सीकर, अंबिका मंदिर-जगत (उदयपुर), अर्थूना-बांसवाड़ा, देलवाड़ा-सिरोही, रणकपुर-पाली, आभानेरी-दौसा।

इकाई - IV

पश्चिमी आधुनिक कला का इतिहास- नव-शास्त्रीयवाद, स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद। प्रभाववाद, नव-प्रभाववाद, उत्तर-प्रभाववाद। फौविज्म, क्यूबिज्म, अभिव्यक्तिवाद। भविष्यवाद, रचनावाद, आध्यात्मिक चित्रकला। दादावाद, अतियथार्थवाद, अमूर्त कला। ऑप-आर्ट, पॉप-आर्ट, एक्शन पेंटिंग न्यूनतम कला और उत्तर-आधुनिक रुझान, आदि।

इकाई - V

सौंदर्य की पश्चिमी अवधारणा - ड्राइंग और पेंटिंग में सौंदर्यशास्त्र के अध्ययन की प्रासंगिकता। अनुकरण और प्रतिनिधित्व का सिद्धांत, रेचन (प्लेटो, अरस्तू), ऑगस्टीन, बामगार्टन, हेगेल, शेलिंग, इमैनुएल कांट, सिगमंड फ्रायड, लियो टॉल्स्टॉय, बेनेडेटो क्रोचे, जॉर्ज सांतायाना, सुज़ैन लैंगर, आई. ए. रिचर्ड्स, रोजर फ्राई और क्लाइव बेल का सौंदर्यवादी दृष्टिकोण।